उत्तराखण्ड राज्य के रामनगर नगर की बंजारा जनजाति का सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन व पलायन के कारणों का अध्ययन

प्राप्तिः 22.05.2021
स्वीकृतः 15.06.2021

डा0 सिराज अहमद
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, भूगोल विभाग,
गोपाल बाबू गोस्वामी राजकीय महाविद्यालय,
चौखुटिया, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)
ईमेलः amansirajahmad@gmail.com

शादाब जहाँ
रिसर्च स्कॉलर,
गृह विज्ञान विभाग
कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

सारांश

बंजारा जनजाति अथवा समुदाय अन्य जनजातियों से कई रुपों में भिन्नता लिए हुए हैं। यह जनजाति प्राचीन समय में मुख्यतः अनाज व्यापारी के रुप में जानी जाती थी। ये लोग ब्रिटिश काल में रेलवे के सूत्रपात तक महत्वपूर्ण व्यवसायिक वर्ग के रूप में व्यापार तथा परिवहन कार्य करते रहे। बंजारो के घुमक्कड़ समूह को 'कारवाँ', 'टांडा' अथवा 'सार्थ' कहा जाता था। बंजारो के प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक उनके व्यापार पथों का भी काफी महत्व रहा है। वे विभिन्न व्यापार पथों का प्रयोग करते थे। वे दुर्गम और दूरवर्ती स्थानों से लेकर जंगलों और पहाड़ों तथा पक्की सड़कों से सम्बन्धित रहे। वे विभिन्न भू–भागों से सम्बन्धित रहते हुए व्यापारिक यात्राएँ करते थे। वे देश के आन्तरिक भागों को समुद्रतटीय नगरों से भी जोड़ते थे। बंजारा जनजाति जब रेल तथा सड़कों के विकास के कारण वस्तुओं की आपूर्ति के व्यापार छिनने के फलस्वरूप स्थायी रूप से बसी तो इनके कई मुस्लिम वर्ग उ०प्र० राज्य के रूहेलखण्ड क्षेत्र में स्थायी रूप से बसने के उपरान्त कुछ वर्ग पुनः वहाँ से उत्तराखण्ड राज्य के नैनीताल जिले के रामनगर की ओर पलायन कर गये। उनके पलायन के कारणों का अध्ययन आवश्यक है।

मुख्य शब्दः *घुमक्कड़ समूह, कारवाँ, टांडा, सेवा प्रदाता, पलायन, आर्थिक विभेदीकरण एवं गत्यात्मकता।*

प्रस्तावना

हम सल्तनत काल से ब्रिटिश काल तक बंजारों को विभिन्न वस्तुओं के व्यापारी तथा परिवहनकर्ता के रूप में देखते हैं। इनका व्यापार व परिवहन कार्य दो रूपों में मिलता है। एक ओर तो ये सामान्य जनता को खाद्य तथा अन्य आवश्यक सामग्री की आपूर्ति कराते थे, दूसरी ओर ये विभिन्न कालों में सेनाओं को भी खाद्य सामग्री की आपूर्ति कराते थे। दोनों ही सन्दर्भों में उनकी उपयोगिता उल्लेखनीय थी (बर्नियर, 1968, पृ0 380, थोर्न, 1818, पृ0 85, फारूक, 1977, पृ0 66,

इर्विन, 1962, पृ0 192, रसैल एण्ड़ लाल, 1975, पृ0 151, क्रूक, 1974, पृ0 150, जहाँगीर, 1863–64, पृ0 345, यूल एण्ड़ बरनेल, 1968,)।

बंजारे आम जनता के साथ–साथ सल्तनत, मुगल कालीन शासकों तथा ब्रिटिशों की सेनाओं के लिए बैलों, ऊँटों, घोड़ो, बैलगाडियों तथा वैगनों द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान को अनाज, दालें, चीनी, नमक, मक्खन, शोरा, बारुद इत्यादि लाने, ले जाने का कार्य करते थे। (मुन्डी 1907, पृ0 98, ब्रिग्स, 1819 पृ0 170–71)। बंजारे वर्ष भर विश्वसनीय रुप से आपूर्ति कर माँग एवं आपूर्ति में संतुलन स्थापित करते रहते थे। ये विशेष रुप से दुर्भिक्ष, सूखा तथा बाढ़ की स्थिति में अत्यधिक उपयोगी सेवा प्रदाता माने जाते थे (क्रूक,1974 पृ052 रसैल एंड लाल,1975,पृ0163)। इस प्रकार इनकी एक घुमक्कड़ एवं गतिशील समाज के रुप में पहचान थी। किन्तु वर्तमान समय में अब एक ही स्थान पर स्थायी होकर रहने लगे हैं। स्थायीकरण का मुख्य कारण रेल तथा सड़कों का विकास होना तथा इनका घुमक्कड़शील रुप में वस्तुओं की आपूर्ति का व्यापार छिनना है। किन्तु कुछ संख्या में बंजारा जनजाति आज भी अर्द्ध घुमक्कड़ रुप में इधर–उधर काम की तलाश में घूम रही है।

ब्रिटिश काल के मध्य में इनके घुमक्कड़ व्यापार व परिवहन कार्य के समाप्त होने पर वे भारत के विभिन्न भागों में स्थायी रूप से बस गये। वर्तमान में बंजारा समुदाय भारत के प्रत्येक राज्य में कुछ न कुछ संख्या में मिल जाता है। उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, मध्य प्रदेश, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, कर्नाटक तथा आन्ध्र प्रदेश में उनकी बड़ी–बड़ी बस्तियाँ हैं। वे वहाँ की जनसंख्या में काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनके व्यवसाय भी अलग–अलग क्षेत्रों में अलग–अलग है।

शोध समस्या की उत्पत्ति

बंजारा जनजाति के बारे में अभी तक कोई विस्तृत संदर्भित पुस्तक न होने तथा इनके बारे में अपूर्ण और भ्रामक सूचनाएं होने के कारण अभी तक इस जनजाति का क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर वितरण तथा इनके निवास, व्यापार व यात्रा मार्गो की जानकारी अत्यंत कम है। इनके उद्भव तथा घुमक्कड़शील जीवन के बारे में भी अपुष्ट एवं अल्प जानकारियाँ उपलब्ध हैं। इनके आर्थिक व सामाजिक क्षेत्र में हुए परिवर्तनों की सकारण मौलिक जानकारियाँ अभी भी नही के बराबर उपलब्ध हैं। मुस्लिम समाज के अंग होते हुए भी अन्य मुस्लिम जातियों से पूर्णतः एक भिन्न समाज बने रहना भी शोध का एक आकर्षण है। एक ही समुदाय के होने के बाबजूद यह हिन्दू बंजारा समुदाय से भी पूर्णतः भिन्न है। घुमक्कड़शील जीवन त्याग कर उनका एक स्थान पर स्थायी रूप से बसने के बावजूद अन्यत्र स्थानों को पलायन कर वहाँ बस जाना भी अध्ययन का आकर्षण है।

अध्ययन की आवश्यकता

बंजारा जनजाति मुख्यतः सामाजिक एवं राजनैतिक दृष्टि से एक पिछड़ी जनजाति है। ये भारतीय सामाजिक परिवेश पूर्णतया आत्मसात् न कर पाने से विकास की मुख्य धारा में सम्मिलित नहीं हो सकें हैं। नवीन बाजार–व्यवस्था एवं परिवहन के साधनों के विकास से आर्थिक पिछड़ेपन के साथ ही शिक्षा के सम्पर्क से भी अछूते रहने के कारण ये किसी नये आर्थिक आधार का विकास नहीं कर सके हैं।

बंजारा जनजाति के कुछ समूह वर्तमान समय तक भी एक स्थान पर स्थापित नहीं हो पाये हैं। उनके स्थाई आवासों में लौटने से पूर्व समुचित आर्थिक आधार की खोज कर रोजगार के

यथासम्भव सुलभ अवसर प्रदान करना एवं उनकी शिक्षा व संगठित सामाजिक जीवन के विकास के प्रतिमान अन्वेषित करना आवश्यक है।

उपरोक्त सामाजिक एवं आर्थिक संक्रमण की कठिनाइयों से उभरने के लिए सरकारी स्तर पर भी इस समुदाय के लिए अभी तक कोई समुचित कदम नहीं उठाये जा सके हैं। अतः वर्तमान अध्ययन के द्वारा इस समुदाय की समस्याओं का समाज वैज्ञानिक विश्लेषण कर इनके विकास की योजनाओं का प्रारुप तैयार करना प्रमुख लक्ष्य होगा।

बंजारा समूह के पहले उत्तर प्रदेश राज्य के रूहेलखण्ड क्षेत्र में स्थायी रूप से बसने के उपरान्त पुनः वहाँ से उत्तराखण्ड राज्य के नैनीताल जिले के रामनगर की ओर पलायन करने के कारणों की व्याख्या करना। वहाँ पर उनके बसाव क्रम, उनके द्वारा अपनाये गये रोजगारों की प्रकृति तथा उनकी सामाजिक एवं आर्थिक संरचना में आये परिवर्तनो की दिशा और कारणों का पता लगाने हेतु वर्तमान अध्ययन की अत्यधिक महत्ता है।

अध्ययन की सार्थकता

वर्तमान अध्ययन के द्वारा बंजारा जनजाति अथवा समुदाय के रूप में अध्ययन करने से उनके एक कालक्रम के पश्चात् घुमक्कड़शील जीवन को त्याग कर एक स्थान पर बसने के विषय में जानकारी मिलेगी। वर्तमान में जिस सामाजिक एवं आर्थिक परिवेश में यह समुदाय रह रहा है। एवं बदलाव की जिन सकारात्मक अथवा विरोधी परिस्थितियों से सामंजस्य स्थापित करने में संघर्षशील है, इस दिशा में कोई भी अध्ययन नही हुए हैं। इस जनजाति के एक स्थान पर बस जाने के उपरान्त पुनः अन्यत्र पलायन कर जाने का अध्ययन काफी रोचक होगा । इस अध्ययन से उनके विषय में प्राप्त जानकारियों को उनके विकास तथा जीवन स्तर को उन्नत बनाने के लिए कार्य योजनाओं का निमार्ण करने में प्रयोग किया जा सकेगा। इससे बंजारों के शैक्षिक तथा राजनैतिक स्तर का भी अध्ययन करना तथा फलस्वरुप उनमें सुधार लाने के लिए सुझाव प्रस्तावित करना भी अत्यधिक प्रासंगिक होगा।

अध्ययन के उद्देश्य

1–रामनगर के बंजारो में आर्थिक विभेदीकरण एवं गत्यात्मकता का अध्ययन तथा वर्तमान अर्थव्यवस्था की समीक्षा।

2–बंजारो के विभिन्न आर्थिक वर्गों की व्यवसाय दशाओं एवं सहायक तथा अवरोधी परिस्थितियों का विश्लेषण।

3–एक काल क्रम के पश्चात सामाजिक जीवन में परिवर्तन का अध्ययन।

4–रामनगर के बंजारो का एक काल क्रम के पश्चात पुनः रूहेलखण्ड क्षेत्र को वापस लौट जाने के कारणों का अध्ययन।

5–नये स्थानों पर उनके द्वारा अपनाये गये व्यवसायों की सकारण व्याख्या तथा उनके प्रति दृष्टिकोण की व्याख्या।

6–बंजारा समुदाय के सामाजिक संगठन, स्तर, सामाजिक दृष्टिकोण, धर्म–निरपेक्षता, राजनैतिक सहभागिता, वाह्य सम्पर्कों एवं व्यवसायगत आकांक्षाओं इत्यादि पक्षों की खोजबीन करना।

7–कृषि, व्यापार एवं परिवहन के नये साधनों के प्रयोग से उत्पन्न अवरोधों तथा सहायक परिस्थितियों का बंजारा जनजाति के मूल व्यवसाय में भूमिका का मूल्यांकन करना।

8–बंजारा जनजाति के विकास में सरकारी संस्थाओं के योगदान की समीक्षा करते हुए विकास एवं नियोजन का एक युक्ति पूर्ण स्वरुप निर्धारित करना।

शोध प्रविधि

विधितन्त्रीय व्यवस्था का स्वरुप निर्धारित करने में आँकड़ो का महत्वपूर्ण स्थान है। वर्तमान अध्ययन में आनुभविक, विवरणात्मक, विवेचनात्मक तथा मौखिक प्रश्नावली के आधार पर विवेचन का प्रयास किया गया। सामाजिक एवं आर्थिक पक्षों के अतिरिक्त उनके कृषि उत्पादन, विपणन, शिक्षा स्तर, राजनैतिक सहभागिता से सम्बन्धित सूचनाओं का संचय प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों स्रोतों से किया गया।

रामनगर के बंजारो का सामाजिक–आर्थिक जीवन

रामनगर में बसने वाले बंजारे उत्तर प्रदेश के रुहेलखण्ड क्षेत्र के टाण्डा बादली, दढ़ियाल तथा दोन्कपुरी टाण्डा से आकर बसे। कुछ बंजारे उ0 प्र0 के बिजनौर जिले के किरतपुर और अफजलगढ़ स्थानों से आकर रामनगर में बसे हैं। किन्तु एक आश्चर्यजनक बात यह है कि जो बंजारे रामनगर मे आये उनमें से कुछ पुनः एक अवधि के बाद अपने मूल निवास स्थानों, टाण्डा बादली एवं दढ़ियाल को वापस लौट गये। प्रारम्भ में 1912 में रामनगर में जामा मस्जिद निर्माण के समय एक इमाम साहब श्री अब्दुल जब्बार आकर बसे। तत्पश्चात् 1916 में कुछ बंजारे टाण्डा बादली, दढ़ियाल तथा दोन्कपुरी टाण्डा में बेरोजगारी के फलस्वरुप रामनगर, हल्द्वानी तथा कालाढूंगी में आकर बसे। कुछ बंजारे हरियाणा के झज्जर से आकर बसे। यह बंजारे झोझे बंजारे कहलाए। ये बंजारे रामनगर मे पर्वतीय क्षेत्र की मण्डी होने के कारण विभिन्न कार्यों हेतु यहॉ आये। रामनगर में लकड़ी की मण्डी होने, आम एवं लीची के बागान मे काम करने, घोड़े लाद कर सामान ढोने, सीमेंट उतारने एवं चढ़ाने, कोसी नदी के खनन के रेत को ढोने का कार्य करते थे। रामनगर मे वर्तमान में बंजारों की संख्या लगभग 4000 है। जबकि कालाढूंगी में लगभग 1500 तथा हल्द्वानी में भी 4000 के लगभग है। दढ़ियाल एवं टांडा के बंजारे नवम्बर व दिसम्बर माह में विक्रय हेतु धान लाते थे। बंजारे दढ़ियाल एवं टांडा बादली में अपने धान को भण्डारण करके रखते थे। जिससे चावल का स्वाद काफी बढ़ जाता था। मई से लेकर जून एवं जुलाई के महीनों में वे आम और लीची के बागानों को किराये पे ले लेते थे। कुछ व्यक्ति इस प्रकार बागों की ठेकेदारी का कार्य करते थे, कुछ निर्धन व्यक्ति उन बागों में मजदूरी का कार्य करते थे। रामनगर मे वर्तमान खताड़ी नामक मौहल्ला में शीरा रखने के लिए खत्ते लगते थे, जिनमें नेपाली मजदूर कार्य करते थे। धीरे–धीरे बंजारे भी इन खत्तों में काम करने लगें। इसीलिए कालान्तर मे वहाँ का नाम खताड़ी पड़ गया। बेरोजगारी के कारण बंजारों ने जीवनयापन के लिए गल्ले के कार्य के अतिरिक्त अन्य व्यवसायों को भी अपनाया। प्रारम्भ में ये घोड़े गाड़ी या खच्चरों पर विभिन्न सामग्रियों का ढुलान करते थे । वर्तमान मे ये टैम्पो तथा हाथ के ठेलो इत्यादि के द्वारा माल ढोने लगे हैं। इनका आर्थिक स्वरुप बदल गया है। इससे इनके जीवन में सरलता तथा आधुनिकता आयी है। ये अपने मकानों के आगे बड़ा सा आँगन रखते थे जिसमें मिर्च मसालों तथा धान को सुखाने का कार्य किया जाता था। बंजारे रामनगर में प्राचीनकाल में केवल खाद्य अनाजों एवं गर्म मसालों का व्यवसाय करते थे किन्तु समय के साथ साथ उन्होनें अपने व्यवसायों को परिवर्तित किया। वर्तमान में ये कृषि, ठेला चलाने, बाग–बगीचों में मजदूरी करने, नौकरी, दुकानदारी, टैम्पो, रिक्शा चलाने, जड़ी बूटी विदोहन एवं छँटान का कार्य करते हैं। कृषि इनके अनाज व्यापार में सहायक व्यवसाय का कार्य

करती है। वे नाई एवं कसाई जैसे कार्यों में भी प्रवेश कर गये हैं। कुछ धनाढ्य बंजारे आरा मशीन, ट्रांसपोर्ट तथा धान मिल व्यवसाय में संलग्न हैं। इस प्रकार इनके व्यवसायों में गत्यात्मकता तथा विवधीकरण परिलक्षित हो रहा है। वे पूरे वर्ष का उपयोग विभिन्न आर्थिक क्रियाओं के लिए करते हैं। विविध व्यवसायों के कारण इनके वाह्य सम्पर्क भी बढ़े हैं। वर्तमान में वे अपने बच्चों को सरकारी सेवाओं में भेजने को प्राथमिकता देने लगे हैं। पहले उनमें सरकारी सेवाओं के प्रति विरक्ति दिखाई देती थी। प्रायः देखा गया है कि बंजारा छात्रों में अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या विद्यमान है। बंजारे अपने बच्चों को पढ़ाई पूरी होने से पूर्व ही अपने व्यवसायिक कार्यों में लगा लेते हैं। छात्रों में अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या को रोकने के सुझाव भी आवश्यक है। बंजारों का नवीन एवं आधुनिक शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अथवा उदासीनता का आकलन भी आवश्यक है। नयी बहुआयामी विकासवादी शिक्षा ग्रहण करने से उनकी मनोवृत्तियों, सोचों एवं दृष्टिकोणों तथा व्यवहार में आये बदलावों का अध्ययन आवश्यक है। नयी शिक्षा से उनके रहन सहन में भी बदलावों को देखा गया है। अन्य धर्मों, भाषा एवं साहित्य के प्रति बंजारा समाज के रूख में भी परिवर्तन आये हैं।

रामनगर के बंजारों की सामाजिक स्थिति में भी बदलाव आये हैं। ये पहले झोझे बंजारों से अपने पुत्र–पुत्री का विवाह नहीं करते थे। किन्तु आज करने लगे हैं। अब इनके अन्य मुस्लिम बिरादरियों से वैवाहिक एवं सामाजिक सम्बन्ध होना प्रारम्भ हो गये हैं। अब इनमें एवं अन्य मुस्लिम बिरादियों में कोई अंतर नहीं रह गया है। ये लोग अत्यन्त धार्मिक एवं सामाजिक प्रवृत्ति के हैं। इनमें दूसरे धर्मों के प्रति सहिष्णुता बढ़ी है। एक व्यापारिक वर्ग होने के कारण इनमें पुत्र प्राप्ति की चाह दिखती है। राजनैतिक प्रक्रियाओं में भी बढ़ चढ़कर भाग लेते हैं। चुनाव में प्रतिभाग करना एवं मतदान करना भी इनकी प्राथमिकताओं में शामिल है। जब बंजारें प्रारंम्भ में रामनगर में आकर बसे तो इनकी बस्तियों का प्रतिरुप अनियमित और अनाकार था। जिसकों जहाँ स्थान मिला वहीं बस गया। घरों का स्वरुप भी कच्चा था, ये मिट्टी एवं खपरैल के कच्चे घर बनाते थे। परन्तु अब बदलाव आया है, अब ये लोग ईट सीमेंट के पक्के मकान बनाने लगे हैं। पहले मिर्च व धान सुखाने के लिए इनके घरों में बड़े व लम्बे आँगन होते थे। परन्तु आजकल ये प्रचलन में नही है, क्योंकि अब भूमि महँगी हो गयी है।

पहले ये लोग कुर्ता पायजामा पहनते थे। आज अधिकाँश लोग पेंट शर्ट पहनने लगे हैं। शैक्षिक क्षेत्र में भी वृद्धि हुई है लेकिन आशानुरुप नही। आज भी अधिकाँश बंजारे निरक्षर हैं। आज भी अधिकांश बंजारें अपनी संतानों को स्कूली शिक्षा न दिला कर दीनी (धार्मिक) शिक्षा दिलाने के पक्ष में हैं। कई लोग सरकारी नौकरियों यथा शिक्षक, डॉक्टर जैसे पेशे मे भी आये हैं। इनके घर की स्त्रियों को घर के निर्णयों मे फैसलें लेने का अधिकार नही है। ये लोग अपनी पुत्रियों को पुत्र की तुलना में कम शिक्षित कराना चाहते हैं। इनकी सोच यह है कि पुत्र उनके व्यवसायों में हाथ बँटायेगें।

एक कालक्रम के पश्चात् कुछ बंजारे पुनः टाण्डा एवं दढ़ियाल लौट गये हैं। जिन लोंगों को काम नहीं मिल पाया वे वापस लौट गये। बंजारो के पुनः वापस रुहेलखण्ड क्षेत्र में लौटने के प्रश्न पूछने पर कुछ बंजारों द्वारा बताया गया कि रामनगर पर्वतीय संस्कृति वाला नगर होने के कारण टाण्डा बादली, दोन्कपुरी टाण्डा और दढ़ियाल की संस्कृति से भिन्न है। अतः वे रामनगर की संस्कृति, समाज एवं परम्पराओं से तालमेल नहीं बैठा पाये। अतएवं वे वापस रुहेलखण्ड क्षेत्र को

लौट गये। इस प्रकार इनके जीवन में कई संक्रमण काल आये। अतः इनके व्यवसायों एवं स्थिर जीवन के लिए मूलभूत योजनाएँ बनानी होंगी जिससे एक प्राचीन जनजाति विकास के पथ पर अग्रसर हो सके।

निष्कर्ष एवं सुझाव

बंजारों के अनाज व्यापार के लिए ऐसी योजनाएँ बनायी जानी चाहिए जिससे वे अनाज व्यापार को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विकसित कर सके। उन्हे अनाज मिलों के लिए सस्ती बिजली, उचित मात्रा में ऋण, करों में छूट तथा अनाज भंडारण हेतु गोदामों की व्यवस्था की जाए। बंजारों की विभिन्न बस्तियों को, जहाँ अनाज व्यापार अत्यंत विकसित अवस्था में हैं, रेलमार्गों द्वारा जोड़ा जाएं जिससे उनका अनाज सरलता से देश के विभिन्न भागों मे भेजा जा सके। जहाँ एक और विभिन्न राज्यों में भूख से मौते हो रही हैं, वँही वहाँ के गोदाम अनाज से भरे पड़े हैं। विभिन्न पक्षों की उदासीनता तथा निष्क्रियता के चलते ऐसी निम्नस्तरीय घटनाओं का होना शर्मनाक है। अतः यदि इस वर्ग को ऐसे कार्यों के लिए प्रयोग किया जाए, जिससे इस वर्ग को भी कार्य मिल सके और वह पारंम्परिक जीवन की तरह वर्तमान में भी उन क्षेत्रों में अनाज आपूर्ति कर सके जहाँ अनाज की कमी है। चूँकि बंजारा वर्ग प्राचीन काल में इस कार्य को करता रहा है और उन्हे इसका लम्बा अनुभव है। सरकारें इस वर्ग को संविदा पर इस प्रकार की अनाज आपूर्ति के कार्य में लगा सकती हैं, जिससे दोनों पक्षों को लाभ मिल सके। रूहेलखण्ड और निकटवर्ती कुमाँऊ क्षेत्र में वनों का काफी विस्तार है। अतः वनों पर आधारित उद्योगों व व्यवसायों का विकास किया जाना चाहिए। फिर बंजारा जाति प्राचीन काल से वनों में रहती आयी है तथा उसकी वनों से पूर्ण परिचितता है। बंजारों को कृषि विकास के क्षेत्र में सर्वप्रथम परम्परागत कृषि प्रविधियों के स्थान पर नवीन कृषि प्रविधियों के लाभों से अवगत कराना होगा। उन्हे मत्सय पालन, मुर्गीपालन, पशु पालन, दस्तकारी, चटाई उद्योग के लिए प्रशिक्षण, प्रोत्साहन एवं अन्य सुविधाएँ उपलब्ध करानी आवश्यक है। उन्हे ग्रामीण उद्योग धन्धों तथा कुटीर उद्योगों को लगाने हेतु प्रेरित किया जाए। एकीकृत विकास कार्यक्रमों के माध्यमों से उन्हे स्वरोजगार हेतु प्रेरित किया जाए।

बंजारों की व्यापारिक विशेषज्ञता का लाभ बदले स्वरूप में भिन्न–भिन्न नवीन व्यवसायों के रूप में भारतीय अर्थव्यवस्था को मिल रहा है। वे आज भी भारत के व्यापार और अर्थव्यवस्था की रीढ़ बने हुए हैं। वे अपने अनुभवों का योगदान वर्तमान में भी नये एवं बदले रूप में दे रहें हैं। विभिन्न सरकारों एवं प्रशासन को उनकी व्यापारिक योग्यता का लाभ उठाकर देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के अवसर प्रदान किये जाने चाहिए।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. अशरफ, के0एम0, "लाइफ एण्ड कन्डीशन ऑफ द पीपुल ऑफ द हिन्दुस्तान", ओरियन्टल पब्लिशर्स, रानी झाँसी रोड़, न्यू देहली, 1959
2. अबेल, डब्लू0सी0, "डिस्ट्रिक्ट गजेटियर रामपुर" इलाहाबाद गवर्नमेन्ट प्रेस, 1911, पृ0**123**
3. असलम अली, सय्यद "इकोनोमिक रोल ऑफ द बंजाराज इन द सेवेन्टीन्थ सेन्चुरी", अनपब्लिश्ड, एम0 फिल0 डिजर्टेशन, डिपार्टमेन्ट ऑफ हिस्ट्री, ए0एम0यू0 अलीगढ़, 1984

4. आफताबची, जौहर, "तजकिरात–उल–वाकियात" अथवा प्राइवेट मेमोअर्स ऑफ मुगल एम्परर, हुमॉयू, ट्रान्सलेटेड बाई चार्ल्स स्टीवर्ट देहली, इदाराह–ए–अदबियात, दिल्ली, एशियाटिक सोसाइटी पब्लिकेशन्स, कलकत्ता, 1972, पृ0 **127**
5. ईपिस्टन, एस0, "इकोनॉमिक डेवेलपमेन्ट एण्ड सोशल चेन्ज इन साउथ इन्डिया", मैनचेस्टर यूनिवर्सिटी प्रेस, 1962
6. इर्विन, विलियम, "आर्मी ऑफ द इन्डियन मुगल्सः इट्स आर्गेनाइजेशन एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन", यूरेशिया पब्लिशिंग हाउस, न्यू देहली, 1962
7. इरफान हबीब, "मर्चेन्ट कम्यूनिटीज इन प्री–कोलोनियल इंडिया", ऐडिटेड बाई जेम्स डी0 ट्रेसी, पेपर प्रेजेन्टेड इन दी कान्फ्रेन्स ऑन दी राइज ऑफ मर्चेन्ट एम्पायर्स; यूनिवर्सिटी ऑफ मिनिसोटा, 9–11 अक्टूबर, 1987, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस 1990
8. एटकिन्सन, ई0टी0, "स्टेटिस्टिकल डेस्क्रिप्शन एण्ड हिस्टोरिकल अकाउन्ट ऑफ द नोर्थ–वेस्टर्न प्रोविन्सेज ऑफ इन्डिया", इलाहाबाद, 1876
9. इलाही, करीम मुन्शी, "फहरिश्त राए दहन्दगॉ बहेड़ी, ",(वोटर लिस्ट ऑफ बहेड़ी, 1936), रोजाना अखबार प्रेस, बरेली, 1936
10. क्रूक, विलियम "द ट्राइब्स एंड कास्ट्स ऑफ दी नोर्थ वेस्टर्न इंडिया" वोल्यूम–1, 1896 रीप्रिन्ट, कोस्मों पब्लिकेशन, देहली, 1974, पृ0 **1021**
11. क्रूक, विलियम "ट्राइब्स एंड कास्ट्स ऑफ नोर्दन एंड वेस्टर्न प्राविन्सेज ऑफ अवध",
12. कंबरलैग, एन0आर0, "सम अकाउन्ट ऑफ दी बंजारा क्लास", इन नोर्थ इण्डियन नोट्स एण्ड कुएरीज, वोल्यम– फोर्थ, जनवरी, 1895
13. छिछरोव, ए0आई0, "इन्डिया इकोनोमिक डेवेलपमेन्ट इन 16–18 सेन्चुरी", नौका पब्लिकेशन, मास्को, 1971
14. थोर्न, विलियम, "मेमोअर्स ऑफ द वार इन इंडिया कन्डक्टेड बाई जनरल लार्ड लेक एण्ड मेजर जनरल सर आर्थर वेलेजली, डयूक आफॅ वेलिगंटन," 1818
15. देवगॉवकर एण्ड देवगॉवकर, "बंजारा", कन्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, मोहन गार्डन, न्यू देहली, 1992
16. नकवी, एच0 के0, "अर्बनाइजेशन एंड अर्बन सेन्टर्स अन्डर द ग्रेट मुगल्स 1556–1803", एशिया पब्लिकेशन, बोम्बे, 1968, पृ0 **58–74**
17. नोविल, एच0 आर0, "डिस्ट्रिक्ट गजेटियर रामपुर", इलाहाबाद गर्वनमेन्ट प्रेस, 1911
18. नोविल, एच0आर0, "डिस्ट्रिक्ट गजेटियर बरेली", इलाहाबाद प्रेस, 1911, पृ0 **273**
19. पन्त, डी0, "द कमर्शियल पोलिसी ऑफ द मुगल्स", तारापोरवाला एण्ड सन्स, किताब महल, होर्नबाई रोड़, बोम्बे, 1930, पृ0 **281**
20. फारूक, ए0एम0, "रोड्स एंड कम्यूनिकेशन इन मुगल इण्डिया", कारनेक हुकलूयत सोसाइटी, देहली, 1977

21. बर्नियर, "ट्रेवल्स इन द मुगल एम्पायर", ट्रान्सलेटेड आर्किबोल्ड कोन्सटेबल, चंद पब्लिकेशन, देहली,1968
22. ब्लन्ट, "कास्ट सिस्टम ऑफ नोर्दन इण्डिया", चन्द पब्लिकेशन, देहली, 1969
23. मगनलाल, ए0 बुच, "इकोनोमिक लाइफ इन एन्सियेन्ट इंडिया", वोल्यूम–।।, इलाहाबाद, आर0 पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद, 1979
24. मुन्डी, पीटर, "ट्रेवल्स ऑफ पीटर मुन्डी इन यूरोप एण्ड एशिया 1608–1667" ऐडिटेड बाई सर रिचर्ड कारनेक टेम्पल, हकलूयत सोसाइटी, लन्दन, 1907
25. मुईद, ए0, "तारीख टांडा बादली" प्रकाशन ए0एच0 प्रिन्टर्स, मुरादाबाद, 1991, पृ0 **33–46**
26. मुकर्जी, आर0, "द इकोनोमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया 1600–1800" इलाहाबाद, 1967
27. यूल एण्ड बरनेल, "हाब्सन जाब्सन", ऐडिटेड, डब्लू कूक, एशियन एजुकेशनल सर्विस, देहली, 1981
28. रसेल, आर0वी0 एण्ड हीरा लाल, "ट्राइब्स एण्ड कास्टस ऑफ द सेन्ट्रल प्रोविन्सेज ऑफ इण्ड़िया" वोल्यूम–11, राजधानी बुक सेन्टर, देहली, 1975
29. राघवैया, वी0आर0, "बैकग्राउन्ड ऑफ ट्राइबल स्ट्रगल्स इन इन्डिया", आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1981
30. रायचौधरी, टी0, "द मुगल एम्पायर" इन टी0 धर्म कुमार एण्ड टी0 रायचौधरी (एड0) 'द कैम्ब्रिज इकोनोमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया' खण्ड प्रथम, ओरियन्ट लोन्गमेन, न्यू देहली, 1982
31. "द इंग्लिश फैक्ट्रीज इन इंडिया" (1622–23), एडिटेड बाई फोस्टर